फरवरी, 2022

सैनिक मित्र

संवाद

VOLUME - 01 ISSUE -7

राष्ट्र रक्षा न समं पुण्यम्

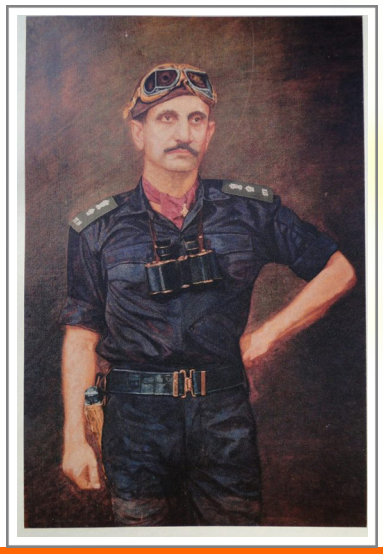

परमवीर चक्र विजेता लेफ्टिनेंट कर्नल एबी तारापुर

'फक्र-ए-हिंद' की शान में तारापोर ने दी थी दुश्मन टैंकों की आहुति

'फक्र-ए-हिंद' की शान में तारापोर ने दी थी दुश्मन टैंकों की आहुति

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध में वर्ष 1965 का युद्ध कई मायनों में यादगार है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे भीषण टैंक युद्ध में 'बैटल आफ फिलोरा' का नाम भी दर्ज है। सियालकोट क्षेत्र में हुआ यह युद्ध असल उत्तर के युद्ध के समानांतर ही चल रहा था। इस युद्ध में भारतीय सेना के सेंचुरियन टैंकों से निकले गोलों ने दुश्मन के आधुनिक पैटन टैंकों के परखच्चे ही नहीं उड़ाए बल्कि उनके दिलों में कभी न खत्म होने वाली दहशत भी भर दी। युद्ध के इतिहास में पराक्रम व बहादुरी की ऐसी ही लकीरें भारतीय फौज की आर्मर्ड बटालियन पुणा हॉर्स ने लेफ्टिनेंट कर्नल एबी तारापोर की अगुवाई में खींची थी। फिलोरा में दुश्मन के टैंक डिवीजन से सीधी भिड़ंत के दौरान बुरी तरह जख्मी होने के बावजूद चिकित्सकीय मदद के लिए रुकने की बजाय सैनिकों को टैंक के साथ आगे बढ़ने का आदेश देते हुए ले. कर्नल तारापोर खुद उनकी अगुवाई करते हुए तब तक बढ़ते रहे, जब तक उन्होंने दुश्मन के दर्जनों टैंकों के परखच्चे नहीं उड़ा दिए और मातृभूमि की रक्षा के लिए शहादत को गले लगा लिया। खुद से पहले देश को रखने वाले अमर शहीद लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर बुर्जोरजी तारापोर को मरणोपरांत सर्वोच्च वीरता सम्मान परमवीर चक्र से नवाजा गया।

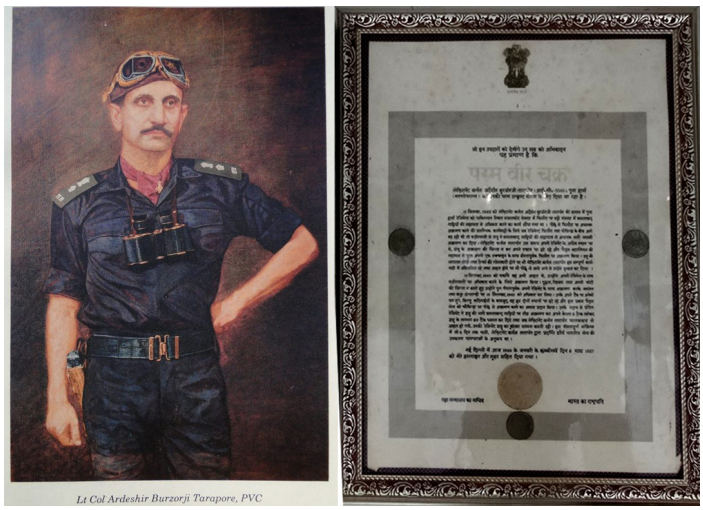

Lt Col Ardeshir Burzorji Tarapore, PVC

लेफ्टिनेंट कर्नल एबी तारापोर
(परमवीर चक्र)

लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर बुर्जोरजी तारापोर का जन्म 18 अगस्त 1923 को महाराष्ट्र के बाम्बे में हुआ था। उनके पिता पहले एक स्कूल में पारसी और उर्दू के शिक्षक थे। जिसके बाद उन्होंने कस्टम और एक्साइज में सेवा की। कर्नल तारापोर को 7 वर्ष की आयु में शिक्षा के लिए पुणे के एक छात्रावास वाले स्कूल में भेजा गया था। इनकी स्कूली शिक्षा के स्थान पर खेलकूद में ज्यादा रुचि थी। स्कूली शिक्षा के बाद तारापोर 1942 में हैदराबाद राज्य की सेना में भर्ती हो गए और ट्रेनिंग के बाद उन्हें हैदराबाद सेना में सेकंड लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्ति मिली। शुरू में उन्हें इन्फैंट्री में भेजा गया जो उन्हें पसंद नहीं था, क्योंकि वह टैंकों वाली आर्मर्ड कोर में जाना चाहते थे। इसी दौरान एक बार हैदराबाद सेना के प्रमुख उनकी यूनिट के निरीक्षण के लिए आए। इस निरीक्षण के दौरान जब सेना प्रमुख निरीक्षण कर रहे थे, उस समय तारापोर ने एक संदेहात्मक गोले को वहां से अचानक फुर्ती से बाहर फेंका जो हवा में ही फट गया। इस प्रकार उन्होंने सेना प्रमुख की जान बचाई। इस वीरता पूर्ण कार्य को करने के लिए तारापोर को शाबाशी देने के लिए सेना प्रमुख ने उन्हें अपने पास बुलाया। उनसे उनकी इच्छा सेना प्रमुख ने पूछी जिस पर तारापोर ने सेना में आर्मड कोर में जाने की इच्छा जताई। इसके बाद उन्हें हैदराबाद की सेना में आर्मड शाखा में स्थानांतरित कर दिया गया। हैदराबाद सेना की आर्मड रेजीमेंट में ही उन्होंने दूसरे विश्व युद्ध में पश्चिमी एशिया में भाग लिया। इसके बाद भारत की आजादी के समय हैदराबाद राज्य का भारत में विलय हो गया और इसकी सेना भी भारत की सेना में मिल गई। तारापोर को भारतीय सेना में एक अप्रैल 1951 को कमीशंड अधिकारी के रूप में पुणा हॉर्स नाम की भारतीय सेना की रेजिमेंट में नियुक्ति मिली।

जन्म से दूसरे की जमीन हड़पने की मंशा रखता है पाकिस्तान

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद पाकिस्तान में सामंतशाही पहले से भी ज्यादा मजबूत हुई और वहां की सेना सामंतशाही का प्रमुख हिस्सा बनी जो अभी तक है। सामंतशाही में जागीरदार और बड़े-बड़े भूमिपति ज्यादा से ज्यादा जमीनों पर कब्जा करके अपनी सामंतशाही चलाते हैं। इसीलिए पाकिस्तानी सेना ने बंटवारे के फौरन बाद जम्मू कश्मीर राज्य पर कब्जा करने की योजना बनाई। बुरी तरह हारने लगे तो दुनिया के सामने खुद को बचाने की गुहार लगाने संयुक्त राष्ट्र में नतमस्तक हो गए। उसी समय युद्ध रुक जाने के कारण कश्मीर का एक हिस्सा पीओके बन गया जो अब तक नहीं सुलझाया जा सका।

इसके बाद 1962 में चीन ने लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक भारत पर हमला कर दिया और दुर्भाग्य से भारत के अक्साईचिन क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। इसका मुख्य कारण था भारत 1947 में आजाद हुआ और इसके बाद भारतीय शासकों ने देश में गरीबी उन्मूलन और विकास को प्राथमिकता दी। जिसके कारण दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में संचार के साधन विकसित नहीं हुए और सेना को भी आधुनिक गोला बारूद उपलब्ध नहीं कराया जा सका। पाकिस्तानी सेना ने जब देखा कि भारतीय सेना इस समय किसी भी प्रकार के युद्ध के लिए तैयार नहीं है और 1962 के परिणामों के बाद भारतीय सेना का मनोबल काफी नीचे है, तो उन्होंने यह समझा की यह उचित समय है जब भारत से कश्मीर को छीना जाए।

दंगा कराकर जीतना चाहा था काश्मीर

पाकिस्तानी सेना ने अगस्त 1965 में ऑपरेशन जिब्राल्टर के द्वारा अपने सैनिकों को कश्मीरियों के वेश में कश्मीर घाटी में घुसा दिया। इसका मुख्य उद्देश्य उस समय वहां उर्स के मेले में दंगे करवा कर विश्व को दिखाना था कि कश्मीर के निवासी भारत में खुश नहीं हैं और वह अलग होकर पाकिस्तान में अपने राज्य का विलय चाहते हैं। परंतु कश्मीर के निवासियों ने स्वयं भारतीय सैनिकों को इन घुसपैठियों के बारे में सूचना दी। जिसके बाद भारतीय सेना ने इन घुसपैठियों को पकड़कर पाकिस्तान के ऑपरेशन जिब्राल्टर को नाकाम किया। इसके फौरन बाद सितंबर 1965 में ही पाकिस्तान ने अपने ऑपरेशन ग्रैंड स्लैम के अंतर्गत दोबारा भारत पर हमला कर दिया। पाकिस्तान के इस हमले का मुख्य उद्देश्य कश्मीर घाटी में तैनात भारतीय सेना का सड़क मार्ग से संबंध देश के मुख्य भाग से तोड़ना था। इसका जवाब देने के लिए भारतीय सेना ने 6 सितंबर 1965 को रेडक्लिफ नामक रेखा, जो भारत पाकिस्तान की सीमा निर्धारित करती है, उसको पार करते हुए सियालकोट

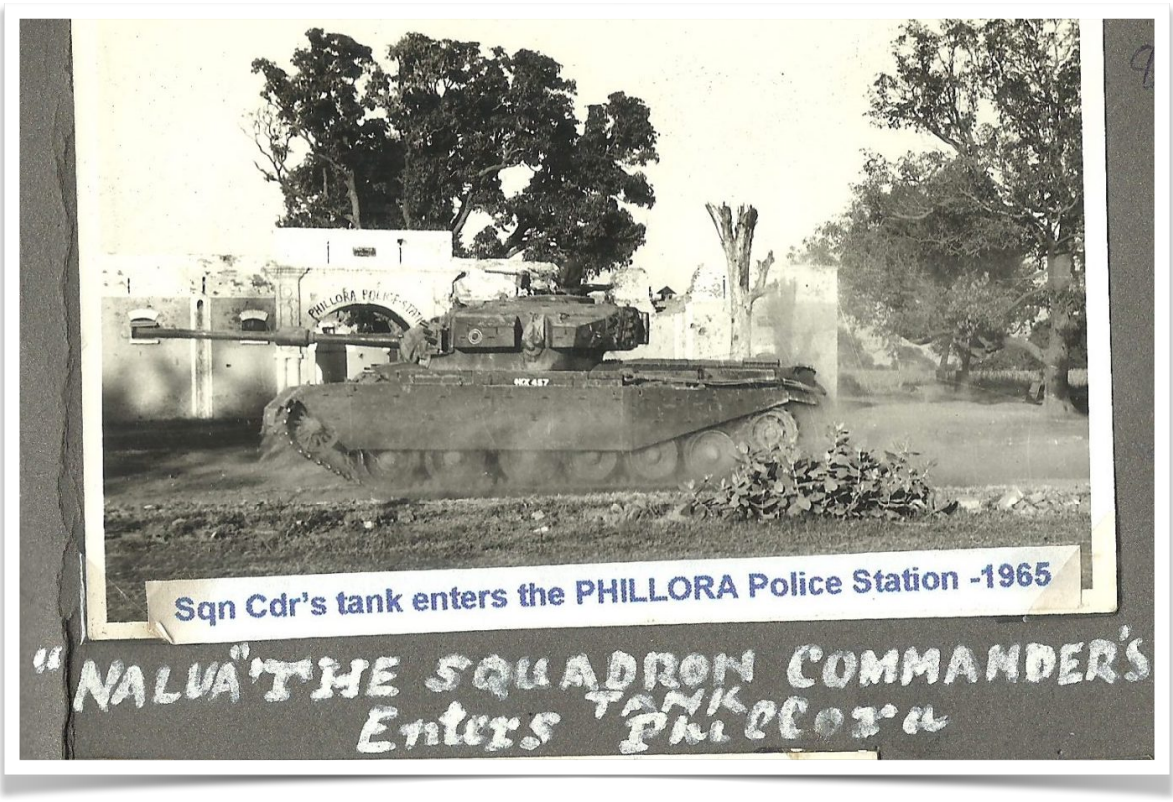

सेक्टर पर कब्जा करने की योजना बनाई। इसके लिए भारतीय सेना की स्ट्राइक कोर को इस हमले की जिम्मेदारी दी गई।

खुद से पहले रखा देश, तब बने पीवीसी

लेफ़्टिनेंट कर्नल एंबी तारापोर ने घायल अवस्था में भी युद्ध भूमि में डटे रहकर भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाया जिसके कारण भारतीय सेना फिलोरा में पाकिस्तानी सेना को हराकर कब्जा कर सकी। वजीरवाली और डोगरांडी के युद्धों में ले. कर्नल तारापुर घायल अवस्था में भी अग्रिम पंक्ति में रहे और उनके दिशा निर्देश में सैनिकों ने पाकिस्तान के तोपखाने की भारी फायरिंग और उसके टैंकों की मौजूदगी में पाकिस्तान के टैंक बर्बाद कर दिए। इस प्रकार उन्होंने फिलोरा के आसपास के क्षेत्र को पाकिस्तानी टैंकों की कब्रगाह बना दिया था। इसके बाद घबराकर पाकिस्तान

Troops with a destroyed Patton tank.
Standing R to L - Lt col K Rishi Raj Singh (Comdt), Ris Maj Jagir Singh (Retd), Maj Gen K Jang Shamsher Singh (Colonel of the Regt) and other officers and men.

Col of the Regt on his visit of the Regt in the op area after cease-fire of 1965. In the background is a Pak M 48 tank knocked down by the Poona Horse

संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व की बड़ी शक्तियों से युद्ध विराम की गुहार लगाने लगा। जिसके कारण भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह अयूब खान के बीच में ताशकंद समझौता हुआ और इस प्रकार 1965 का युद्ध समाप्त हुआ। फ्लोरा के हमले में घायल अवस्था में होते हुए भी डटे रहकर अपने मिशन को शौर्य और साहस से पूरा करने के उपलक्ष में भारत सरकार ने युद्ध के बाद ले. कर्नल एबी तारापोर को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया।

खुल गया था दुश्मन की झूठ का पुलिंदा

युद्ध के बाद से ही अपने देशवासियों के सामने नाक बचाने के लिए पाकिस्तानी सेना ने 65 की लड़ाई में अपनी जीत का ढिंढोरा पीटा था। फील्ड मार्शल अय्यूब खान की सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सचिव रहे अल्ताफ गौहर ने पहली बार इसका खुलासा किया था। उन्होंने एयर मार्शल एम असगर खान की किताब 'द फर्स्ट राउंड' की प्रस्तावना में लिखा था कि 'सेना के बाहर कुछ लोगों को एहसास हुआ कि 65 की लड़ाई में पाकिस्तान तबाही के कितने करीब आ गया था'। पुणा हॉर्स की स्थापना अंग्रेजी शासनकाल में 15 जुलाई 1817 को पुणा के निकट सिरुर में हुई थी। इसका पहला नाम पुणा ऑग्जिलियरी हॉर्स था। बाद में इसे 3 रेजिमेंट बाम्बे लाइट कैवेलरी के नाम से स्थापित यूनिट के पहले कमान अधिकारी मेजर पी डेलामोट्टे बने। बाद में कई बार पुणा हॉर्स के साथ नाम में कुछ जुड़ाव हुए और वर्ष 1927 में द पुणा हॉर्स नाम पड़ा। इस यूनिट को सर्वाधिक 37 युद्ध सम्मान मिले हैं। इनमें अंग्रेजी शासन का सबसे बड़ा सम्मान चार विक्टोरिया क्रॉस, दो परमवीर चक्र, दो महावीर चक्र, दो वीर चक्र, पांच कीर्ति चक्र व अन्य शामिल हैं। पाकिस्तानी जमीं पर लिब्बे, फिलोरो, वजीरवाली, जसोरन और बुटुर डोगरांडी में पुणा हॉर्स के रणबांकुरों का पराक्रम देखने के बाद पाकिस्तानी सेना ने इस बटालियन को 'फक्र-ए-हिंद' नाम दिया था।

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर में पूज्य रज्जू भैया जन्म महोत्सव व वार्षिकोत्सव का आयोजन

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक प्रोफ़ेसर राजेंद्र सिंह रज्जू भैया की 100वीं जयंती पर 30 जनवरी को रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर में उनका जन्म महोत्सव मनाया गया। पूज्य रज्जू भैया के जन्मोत्सव को विद्यालय में वार्षिकोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी मेरठ के पूर्व कुलपति श्री नरेंद्र तनेजा जी, राज्यसभा सदस्य श्री विजयपाल तोमर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र प्रचारक श्री महेंद्र जी, अलीगढ़ के उद्योगपति श्री प्रदीप सिंघल, विद्या भारती के क्षेत्रीय मंत्री श्री लक्ष्मण सिंह बिष्ट, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र संघचालक माननीय सूर्य प्रकाश जी, विद्या भारती के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री मनवीर सिंह, रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर के वरिष्ठ संरक्षक श्री सीएल बरेजा जी व अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। रज्जू भैय्या सैनिक विद्या मंदिर में वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यालय कि स्मारिका के विमोचन के साथ विद्यालय के निर्माण व विकास के लिए समर्पित समाजसेवियों का सम्मान व सैनिक मंत्री योजना से जुड़े सभी सैनिक मित्रों का भी सम्मान किया गया।

स्वागत है ।

के जन्मोत्सव पर
आपका हार्दिक स्वागत है ।

R.B.S.V.M

रज्जू भैया सैनिक
R.B.S.V.M

रज्जू भैया सैनिक
R.B.S.V.M

R.B.S.V.M

रज्जू भैय्या सैनिक विद्या मंदिर में मनाया गया गणतंत्र दिवस समारोह

रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर खंडवाया, शिकारपुर में 73वाँ गणतंत्रता दिवस मनाया गया जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री गंगाराम जी ने ध्वजारोहण करते हुए कहा कि हमारा देश अनेक बलिदानियों के बलिदान से 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ है। स्वतंत्रता के बाद देश को सुचारु रूप से चलाने के लिए 26 जनवरी 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ किंतु अब हम सबका दायित्व है कि हम अपने राष्ट्र को उन्नति व यशस्विता के मार्ग पर ले जाने में सहभागी बने तथा अपने राष्ट्र को विश्व गुरु के पद पर आसीन कराने के लिए संकल्प करें। विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री नरेश सिंघल जी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश की उन्नति में शिक्षा ही एकमात्र सर्वश्रेष्ठ साधन है जिसके लिए रज्जू भैया सैनिक विद्या मंदिर हमेशा कटिबद्ध है। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविंद गुप्ता, श्री राजपाल सिंह, खंडवाया ग्रामप्रधान शिवकुमार सहित समस्त शिक्षक बन्धु उपस्थित रहे।